रिकार्ड:-

रिकार्ड:- इस पाप की दुनियाँ से .... ओम् शान्तिः प्रातःक्लास 17-12-67

यह कौन कहते है और किनको कहते है? रुहानी बच्चे। बाबा बार-2 रुहानी बच्चे क्यों कहते है? क्योंकि अब आत्माओं का जाना है अपने घर। फिर जब इस दुनियां मैं आवेगें तो सुख होगा। आत्माओं ने यह शान्तिः और सुख का वर्सा कल्प पहले भी पाया था। अब फिर वो वर्सा रिपीट हो रहा है। रिपीट हो तो ही तो सृष्टी का चक्र फिर से रिपीट हो। रिपीट तो सब होता है नां। जो कुछ पास्ट हुआ है सो रिपीट होगा। यूं तो नाटक भी रिपीट होता है। परन्तु उनमे तो चेंज भी कर सकते है। कोई अक्षर भूल जाता है तो बदली कर दुसरा भी डाल देते है। उसको फिर बाईसकोप कहा जाता है। इसमे तो कुछ चेंज नही कर सकते है। यह तो अनादी ही बना बनाया है। उन नाटको को तो बना बनाया नही कहेंगें। इस ड्रामा को समझने से फिर उस ड्रामा की भी समझ आ जाती है। बच्चेसमझते है कि यह जो भी नाटक आद देखते है वो सब है झूठे। कलयुग मे तो जो चीज देखी जाती है वो सतयुग मे होगी ही नही। सतयुग मे तो जो हुआ था सो फिर सतयुग मे ही होगा। यह हद का नाटक आद तो फिर भी भक्ति मार्ग मे ही होगें। जो चीज भक्ति मार्ग मे होती है वो चीज ज्ञान मार्ग अर्थात सतयुगमे नही होती है। तो अब बेहद के बाप से तुम वर्सा पा रहे हो। बाबा ने तो एक मुरली मे भी चलाया था कि एक तो लौकिक बाप है और एक पारलौकिक बाप से ही वर्सा मिलता है। बाकी तो जो अलौकिक बाप है उनसे वर्सा नही मिलताहै। यह खुद भी उनसे ही वर्सा पाते है। यह जो प्राप्टी है नई दुनियां वो बेहद का बाप ही देते है सिर्फ इन द्वारा। इनसे ही एडाप्ट करते है इसलिये ही इनको बाप कहते है। भक्ति मार्ग मे भी लौकिक और पारलौकिक दोनो ही याद आते है। यह(आलोकिक)याद नही आता है। क्योंकि इनसे तो कोई भी वर्सा मिलता ही नही है। बाप अक्षर तो बरोबर है परन्तु यह ब्रह्मा भी तो रचना है तो है नां। रचना को रचता से वर्सा मिलता है। तुमको भी तो शिव बाबा ने ही क्रियेट किया है। ब्रह्मा को भी उसने ही क्रियेट किया है। वर्सा क्रियेटर से मिलता है। वो है बेहद का बाप। ब्रह्मा के पास बेहद का वर्सा है क्या? बाप इन द्वारा बैठ समझाते है। इनको भी वर्सा मिलता है। ऐसे नही कि वर्सा ले लेकर फिर तुमको देते है। नही। बाप कहते है कि तुम इनको भी याद नही करो। यह बेहद के बाप से तुमको भी प्राप्टी मिलती है। लौकिक बाप से हद का पारलौकिक बाप से बेहद का वर्सा मिलता है। दोनो का वर्सा रिजर्व हो गया। इनसे तो कुछ मिलता नही है। भल तुम इनको बाबा कहते हो, अच्छा बाबा से क्या मिलता है? शिव बाबा से तो वर्सा मिलता ही है। बुधी मे आता है। बाकी ब्रह्मा बाबा से मिला वर्सा क्या कहेंगें? बुधी मे जागीर आती है नां। यह बेहद की बादशाही तुमको उनसे ही मिलती है। वो तो है बडा बाबा। यह तो कहते है कि मुझे याद नही करो। मेरे पास तो कोई भी प्राप्टी है ही नही जो कि तुमको मिले। जिनसे ही प्राप्टी मिलनी है उनको ही याद करो। वो ही कहते है कि मामेकम् याद करो। लौकिक बाप की प्राप्टी पर तो कितना झगडा भी चलता है। यहा पर तो झगडे की बात ही नही है। बाप को याद नही करेंगें तो आटोमैटिकली ही बेहद का वर्सा नही मिलेगा। बाप कहते है कि अपेन को आत्मा समझो। अपने रथ को भी कहते है कि तुम अपेन को आत्मा समझ मुझको याद करो तो ही तुमको भी विश्व की बादशाही मिलगी। इसको ही कहा जाता है कि याद की यात्रा। देह के सब सम्बन्धों को छोड कर अपेन को देही समझना है। इसमे ही मेहनत है। पढाई के लिये कोई नां कोई तो मेहनत भी होनी ही चाहिये नां। इस याद की ही यात्रा से तुम पतित से पावन बनते हो। वो यात्रा तो करते ही है शरीर से। यह तो है आत्मा की यात्रा। यह तो तुम्हारी आत्मा है परमधाम मे जाने की। परमधाम अथवा मुक्तिधाम धाम कोई भी जा नही सकते है सिवाय इस पुरुषार्थ के। जो अच्छी रीती याद करते है वो ही जा भी सकते है और फिर वो ही ऊंच पद भी पा ही सकते है। जायेंगें तो सभी। परन्तु वो तो पतित है नां। इस लिये ही पुकारते है। आत्मा ही याद करती है। खाती पीती सब कुछ आत्मा करती है न

है नां। इस समय तो तुमको देहीअभिमनी बनना है। यही मेहनत है। बिगर मेहनत तो कुछ मिलता नही है। है भी बहुत सहज। परन्तु माया का आपोजीशन होता है। किनकी तकदीर अच्छी है तो झट इसमे लग जावेंगें। कोई तो फिरदेरी से भी आवेंगें। अगर वुधी मे ठीक रीती बैठ गया तो तो कहेंगें किरास अब तो ह सन्यास आद छोड कर वैठ तपस्या करते है। तुम तो राजऋषी हो नां। यह तो तुम्हारी तपस्या ही है सहज-राज-योग की। इसके लिये तो कही पर भी जाने वा भटकने की दरकार ही नही है2 कहेंगें हम अब तो मै इस रुहानीयात्रा मे ही लग जाता हूं। ऐसे ही तीव्र वेगसे लग जावे तो अच्छी ही दोडी पहन सकते है। घर मे रहते हुये भी वुधी मे आ जावेगा। यह तो वहुत ही अच्छी राईट बाते है। मै तो अपने को आत्मा समझ कर पतित पावन बाप को याद करता हूं। बाप के ही फरमान पर चले तो पावन बन सकते है। बनेंगें भी जरुर। पुरुषार्थ करने की ही बात है। परन्तु है तो बहुत ही सहज। भक्ति मार्ग मे तो बहुत ही डिफीकलटी होती है। यहां पर तो तुम्हारी वुधी मे है कि अब हमको तो वापस बाबा पास जाना है। फिर यहां पर आकर विष्णु की माला मे पिरोये जाना है। माला का हिसाब करे तो माला तो ब्रहमा की भी है। रुद्र की भी है। फलीम2 नई सृष्टी की तो यह है नां। वाकी तो सभी पीछे हो आते है। गोया पिछाडी मे पिरवोने है। कहेंगें तुम्हारा ऊंच कुल क्या है? हम असल मे तो विष्णु कुल के थे। फिर क्षत्रीय कुल के बने। फिर इसेस ही बरादरियां निकलती है। इस नालेज ही से तुम समझते हो कि बरादरियां कैसे बनती है। पहले तो रुद्र की माला बनती है। ऊंच ते ऊंच बरादरियां है। बाप ने समझाया है कि यह तुम्हारा बहुत ऊंच ते ऊंच कुल है। यह भी बच्चे समझते है कि सारी दुनियां को पैगाम तो जरुर ही मिलेगा। जैसे कि अरविन्द घोष की माई भी कहती है कि भगवन तो जरुर कही पर आया हुआ है, परन्तु पता नही पड़ता है। आखरीन पता तो सभी को ही लगेगा। अखबारो मे भी पड़ता जावेगा। अब तो थोडा डालते है। ऐसे नही है कि एक ही अखबार सब पड़ते है। लाईब्रेरी मे पढ़ सकते है। कोई तो दो चार भी पढ़ते है। कोई तो बिलकुल भी नही पढ़ते है। यह भी सबकोपता तो पडना ही है कि बाबा आया हुआ है। विनाश का समय नजदीक होगा तो पता पडेगा। न ईदुनियां की स्थापना-पुरानी दुनिया का विनाश होता हैं। हो सकता है बहुतों को सा० भी हो। सन्यासियों को, राजाओं आद बहुतों को ज्ञान तुमको देना हैं। बहुतों को पैगाम मिलना है। जब सुनेंगे बेहद का बाप आया है वह ही सदगति देने वाला है तो बहुत आवेंगे। अभी अखवार मे दिलपसन्द कायदे मुजिभ निकला न हैं। कोई निकल भी पड़ेंगे। पूछताछ करेंगे। बच्चे समझते हैं श्रीमत पर हम सतयुग की स्थापना कर रहे हैं। तुम्हारी यह नई मीशन है। तुम होईश्वरीय मिशन के नई ब्राभाती। जैसे क्रिश्चन मिशन के क्रिश्चन भाती बन जाते हैं। तुम हो ईश्वरीय भाती। इसलिए गायन है अति अ ईन्द्रिय सुख गोप-गोपियो से पूछो जो आत्माभिमानी बने हैं। एक बाप को ही याद करना है दूसरा न कोई। गायन तो हैं ना। भारत का प्राचीन राजयोग भी गाया हुआ हैं। इनसे ही बाप ने नई दुनिया की स्थापना की। उनको हम जानने चाहते हैं। कोई ऊंच होगा। समझाने वाला भी प्रवीण हो। सहराजयोग एक बाप ही सिखलाते हैं। वही गीता का भगवान हैं। सभी को घरी बाप का निमंत्रण वा पैगाम देना है। यह सभी बातें हैं ज्ञान का श्रृंगार। न कि भक्ति का। यह बाप ने बैठ समझाया हैं। मनुष्यों को समझाने लिए। यह चित्र आद तो प्रायः लोप हो जावेंगे। बाकी यह ज्ञान आत्मा में रह जाता हैं। बाप को भी यह ज्ञान हैं। ड्रामा मे नुध हैं। अभी तुम भक्ति मार्ग पास कर ज्ञान मार्ग मे आये हो। तुम जानते हो हमारी आत्मा मे यह पार्ट है जो चल रहा है। नुध था ब्रह्मा से फिर हैं हम राजयोग सीख रहे है बाप से। बाप को हो आये यह नालेज देनी थी। यह भी अभी तुम ही समझते हो आत्मा मे नुध श्री है। वहां जाये पहुंचेंगे फिर नई दुनिया का पाट रिपीट होगा। आत्मा के सारे रिकार्ड का अभी नम्बरवार भरे गये है। शुरु से लेकर। फिर यह सब बन्द हो जावेंगे। भक्ति मार्ग का पाट भी बन्द हो जावेगा। फिर जो तुम्हारी स्टट सतयुग में चली होंगी वही चलेगी। क्या होगा यह बाप नहीं बताते हैं। जो हुआ होगा

वह ही होगा समझा जाता है सतयुग है नई दुनिया। जहां वहां सब कुछ नया और सतोप्रधान सस्ता होगा। जो कुछ कल्प पहले हुआ था वह ही होगा। देखते भी है इन ल0ना0 को कितने सुख हैं। हीरे जवाहर आद धन बहुत हैं। धन है तो सुख भी हैं। यहां तुम भेंट कर सकते हो। वहां नहीं कर सकेंगे। यहां की बातें वहां सब भूल जायेंगे। यह है नई बात जो बाप ही बैठ बच्चों को समझाते हैं। आत्माओं से बात करते हैं। शरीर का नाम पड़ने से फिर उस पर ही कारोबार चलती हैं। अभी तो तुम आत्माओं को वहां जाना है जहां सारे कारोबार बन्द होती हैं। हिसाब-किताब सब चुक्त होता है। रिकार्ड पूरा होता है। एक ही रिकार्ड बहुत बड़ा है। कहेंगे फिर तो आत्मा भी इतनी बड़ी होनी चाहिए। परन्तु नहीं। इतनी छोटी आत्मा में इतना बड़ा रिकार्ड भरा हुआ है। यह ही वन्डर है। यह बातें अभी तुम ही सुनते हो। और कोई सुनाये न सके। इतनी छोटी आत्मा में 84 जन्मों का पार्ट हैं। आत्मा भी अविनाशी हैं। इसको वन्डर ही सिर्फ कहेंगे। ऐसी आश्चर्यवत चीज़ कोई हो न सके। बाबा के लिए तो कहेंगे सतयुग त्रेता का समय विश्राम पुरी में रहते हैं। हम तो आलराउन्ड पार्ट बजाते हैं। सब से जास्ती हमारा पार्ट हैं। तो बाप वर्सा भी ऊंचा देते है। कहते हैं 84 जन्म भी तुम ही लेते हो। हमारा तो पार्ट फिर ऐसा हैं जो कोई बजा न सके। वन्डर फुल बातें हैं ना। यह भी वन्डर है जो आत्माओं को बाप बैठ समझाते है। आत्मा मेल-फिमेल नहीं हैं। जब शरीर धारण करती हैं तो मेल-फिमेल कहा जाता है। आत्माएं सभी बच्चे हैं तो भाई2 कहा जाता है। भाई2 हैं जरूर वर्सा पाने लिए। आत्मा बाप का बच्चा हैं ना। वर्सा लेते हैं बाप से। इसलिए मेल ही कहेंगे। सभी आत्माओं का हक हैं बाप से वर्सा लेने का। इसके लिए बाप को याद करना हैं। अपन को आत्मा समझना हैं। हम सभी ब्रदर्स हैं। आत्मा मेल ही हैं वह कब बदलती नहीं। बाकी शरीर कब मेल का कब फिमेल का लेती हैं। आत्मा को वर्सा मिलता हैं बाप से। इसलिए आत्मा को मेल ही कहेंगे। यह बड़ी अटपटी बातें समझने की हैं। और कोई कब सुना न सके। बाप से या तुम बच्चों से ही सुन सकते हैं। बाप तो तुम बच्चों से ही बात करते हैं। आगे तो सब से मिलते थे। सब से बात करते थे। अब कमती करते2 आखरीन तो कोई से बात नहीं करेंगे। सन शोज़ फादर हैं ना। बच्चों को ही पढ़ना है। तुम बच्चे ही बहुतों की सर्विस करते हो। बाप समझते हैं यह बहुतों को आप समान बना कर ले आते हैं। यह बड़ा राजा बनेंगे। यह छोटा राजा। यह प्रजा बनेंगे। सेना भी तुम हो। जो सब को रावण के जंजीरों से छुड़ा कर अपने मिशन में ले आते हो। जितना जो सर्विस करते हैं उतना फल मिलता हैं। जिसने जो जास्ती भक्ति की है बुद्धि जास्ती होशियार हो जाते हैं। और वर्सा लेते हैं। मालूम पड़ता जाता हैं। फाईनल जब होगा तब बाद। इसको फिर कहा जाता हैं भावी। कोई बिमार हो पड़ते हैं जो पढ़ते नहीं हैं। यह भी पढ़ाई है। अच्छी रीत पढ़ाई न की तो फेल हो जायेंगे। पढ़ाई बहुत सहज हैं। समझना और फिर समझाना भी हैं। डिफीकल्ट की कोई बात नहीं। परन्तु राजधानी स्थापन होनी हैं। उसमें तो सब चाहिए ना। पुरुषार्थ करना हैं इसमें हम ऊंच पद पावें। मृत्युलोक से ट्रान्सफर हो कर अमरलोक में जाना हैं। जितना पढ़ेंगे उतना ऊंच पद पावेंगे। सारा पढ़ाई पर ही और जोर हैं। याद की यात्रा और पढ़ाई। पढ़ेंगे लिखेंगे तो बड़ा पद पावेंगे। बाप को प्यार भी करना होता हैं। क्योंकि यह तो वस्तु बहुत प्यारे ते प्यारे वस्तु हैं, प्यार का सागर भी हैं। बच्चों को प्यार करते हैं। उनको सागर बनते हैं। वर्सा तो सब को पाना हैं। इसलिए नम्बरवार प्यार करते हैं। एक सा प्यार भी हो न सके। कोई याद करते हैं कोई नहीं करते हैं। किसको समझाने का भी नशा रहता हैं। यह बड़ा ऐलेवेशन हैं कोई गोडफादरली यूनिवर्सिटी हैं। यह स्प्रीच्युल पढ़ाई हैं। ऐसी चित्र और कोई स्कूल में नहीं सिखाई जाती। दिन प्रतिदिन बनते ही रहेंगे। बाबा को ख्याल आ रहा था ऐसे चित्र बनावे जो मनुष्य देखते ही समझ जावें। सीढ़ी बहुत है। बाकी देवता धर्म का न होगा तो वह नहीं समझेंगे। अपने कुल का तो हैं जो कोई देवी देवता धर्म के पत्ते होंगे वही आवेंगे। तमको फील होगा यह तो बहुत रूची से सुन रहा हैं। कोई तो सुने जो जास्ती जिसने अच्छी भक्ति की होगी वह दिमाग से सुनेगें। क्योंकि उनको ही पहले जाना होगा। आगे और